जैन धर्म का एतिहासिक प्रमाण और शिक्षाएं

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

जैन मान्यताओं के अनुसार जैन धर्म एक शाश्वत धर्म है जिसकी पुनर्स्थापना तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा की गई थी| लेकिन एतिहासिक प्रमाण के अनुसार लगभग 600 BC के आस-पास महत्वपूर्ण धार्मिक दार्शनिक क्रांति हुई| इस समय कई नवीन विचारकों एवं विचारों का उदय हुआ| इन्हीं में से एक प्रमुख विचारक महावीर स्वामी ने जैन धर्म को स्थापित किया| हम यहाँ मान्यताओं को नजरअंदाज करते हुए अभिलेखीय और साहित्यिक स्त्रोतों के आधार पर प्रतियोगिता परीक्षा के लिहाज से जैन धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई, उदय के कारण एवं परिस्थितियां, पार्श्वनाथ तथा महावीर स्वामी का परिचय, दर्शन तथा शिक्षाएं, तत्व मीमांसीय विचार, शाखाएं, समितियां और ग्रंथ, मोक्ष के साधन आदि बातों को बता रहे है|

जैन धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई

जैन मान्यताओं के अनुसार इस धर्म की उत्पत्ति एवं विकास के लिए 24 तीर्थंकर उत्तरदायी थे. इस मत के अनुसार जैन धर्म एक शाश्वत धर्म है जिसकी पुनर्स्थापना तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा की गई थी. इसके 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे तथा महावीर स्वामी 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर थे. पार्श्वनाथ ने अपने अनुयायियों को आचार संहिता प्रदान करते हुए चार महाव्रतों का प्रतिपादन किया - सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह तथा अस्तेय. महावीर जी ने इसमें ब्रह्मचर्य का समावेश किया|

हम यहाँ मान्यताओं को नजरअंदाज करते हुए अभिलेखीय और साहित्यिक स्त्रोतों के आधार पर जैन धर्म के उदय के कारण एवं परिस्थितियां पर विचार करते हुए इस धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई को समझने का प्रयास करेंगें|